रसोईघर की खिड़की

डॉ मधु पंत

स्पर्श Sparshmani माणी

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

ISBN : 978-81-922136-0-6

रसोईघर की खिड़की

लेखक :
डॉ. मधु पंत

प्रकाशक :
स्पर्शमणि
104 पॉकेट–ए, माउन्ट कैलाश,
ईस्ट ऑफ कैलाश,
नई दिल्ली – 110065
मो. नं. 9958077550

संस्करण :
सन् 2012

चित्रांकन
मास्टर मनीष कुमार

रूपांकन
श्रीमती सरस्वती

मूल्य : ₹95/–

रसोईघर की खिड़की

प्रेरणा स्रोत – श्राव्या को....

बच्चों से.....

नन्हे साथियो!

क्या तुम्हारे साथ भी कभी ऐसी अनहोनी घटना हुई, कि रसोई घर के बरतन बोलने लगे?उस दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ..... रसोईघर की खिड़की खोली तो देखा कि सारे बरतन बोल रहे थे..... अपनी-अपनी पोल खोल रहे थे। कोई किसी से कम न था।

चलो तुम्हें भी वही नज़ारा दिखते हैं और बरतनों की राम-कहानी सुनाते हैं।... बड़ा मज़ा आएगा.....

-मधु पंत

पुस्तक के संबंध में ....

इस पुस्तक का उद्देश्य बच्चों की प्रेक्षण शक्ति को बढ़ा, उनकी कल्पनाशीलता और सोच को नई दिशा देना है। अपने आस–पास की वस्तुओं से बच्चों की पहचान करा, उनके उपयोग से बच्चों को परिचित कराना भी पुस्तक का एक अन्य उद्देश्य है। बच्चे बचपन से ही रसोई घर के बरतनों से परिचित होते हैं.... पर शायद उनका नाम व उपयोग नहीं जानते। इस पुस्तक में कविता के माध्यम से बरतनों का आत्मकथ्य है जो न केवल रोचकता और अनूठेपन से भरपूर है बल्कि बच्चों को, वस्तुओं को एक नई दृष्टि से देखने की योग्यता भी प्रदान करता है। कल्पना की उड़ान भरने की पूरी छूट लिए, बाल–सुलभ–मन की मौलिकता से भरपूर है यह पुस्तक।

खुली रसोईघर की खिड़की,
देखा बरतन बोल रहे हैं।

तवा-कढ़ाई, चकला बेलन,
सब अपना मुँह खोल रहे हैं।

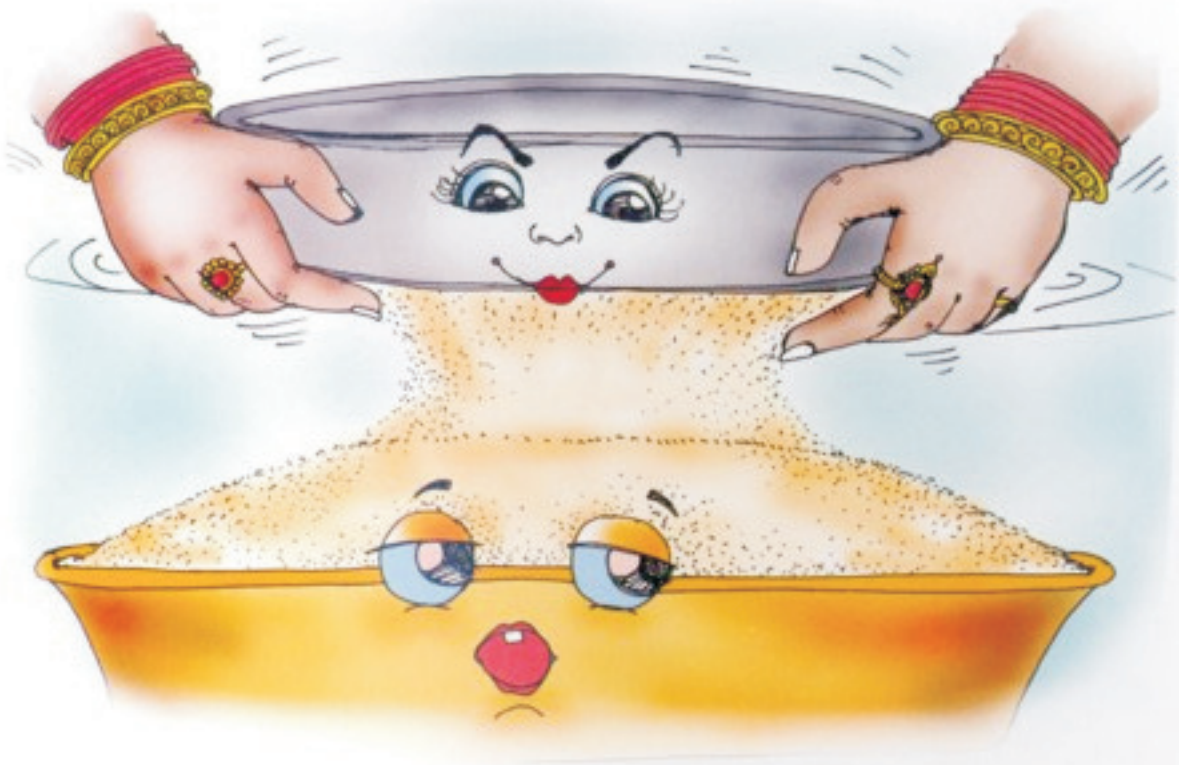

मैं छलनी हूँ छेदों वाली,
चाहे दिखती खाली-खाली।

पर जब चाहो मुझे हिलाओ,
नचा-नचा, आटा छनवाओ।

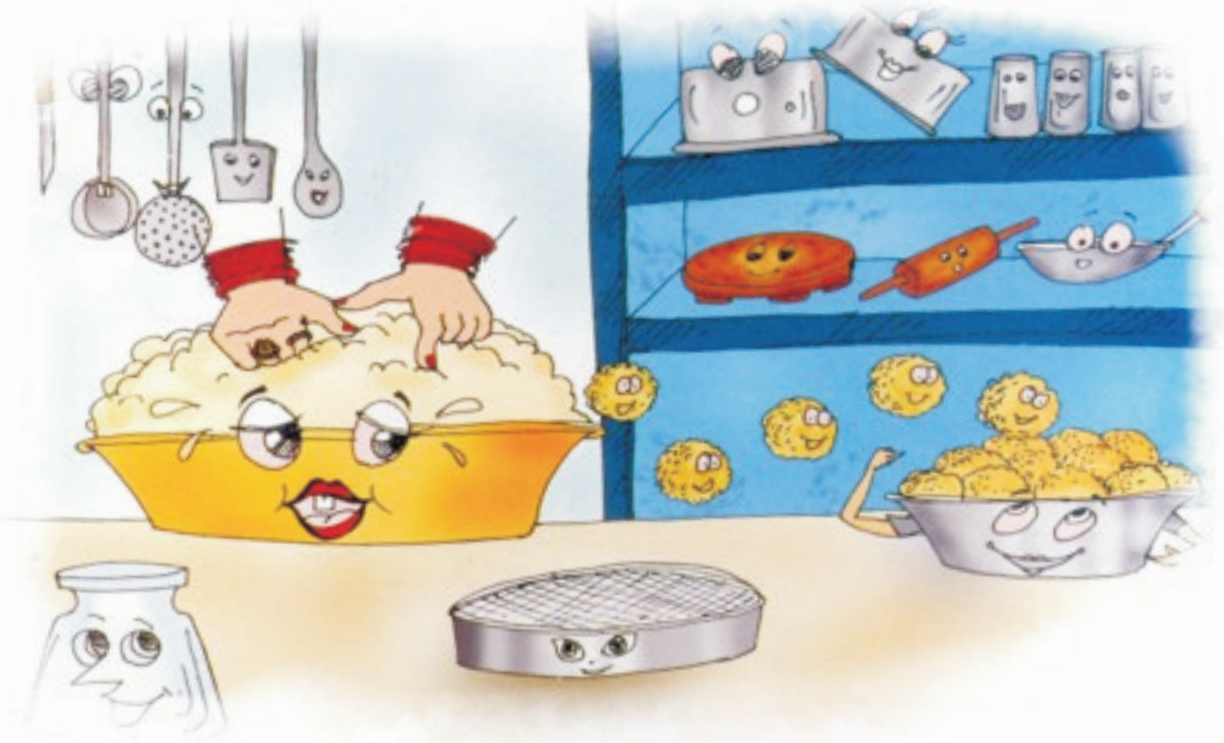

लुढ़कन-पुढ़कन, भारी-भरकम,
घर में आटा सानूँ हरदम।

भर-भर लड्डू चले बरात,
मुझे कहें सब लोग परात।

हम दोनों चकला-बेलन हैं,
नहीं किसी से भी हम कम हैं।

रोटी, पूरी, मठरी बेलें,
आटे की लोई से खेलें।

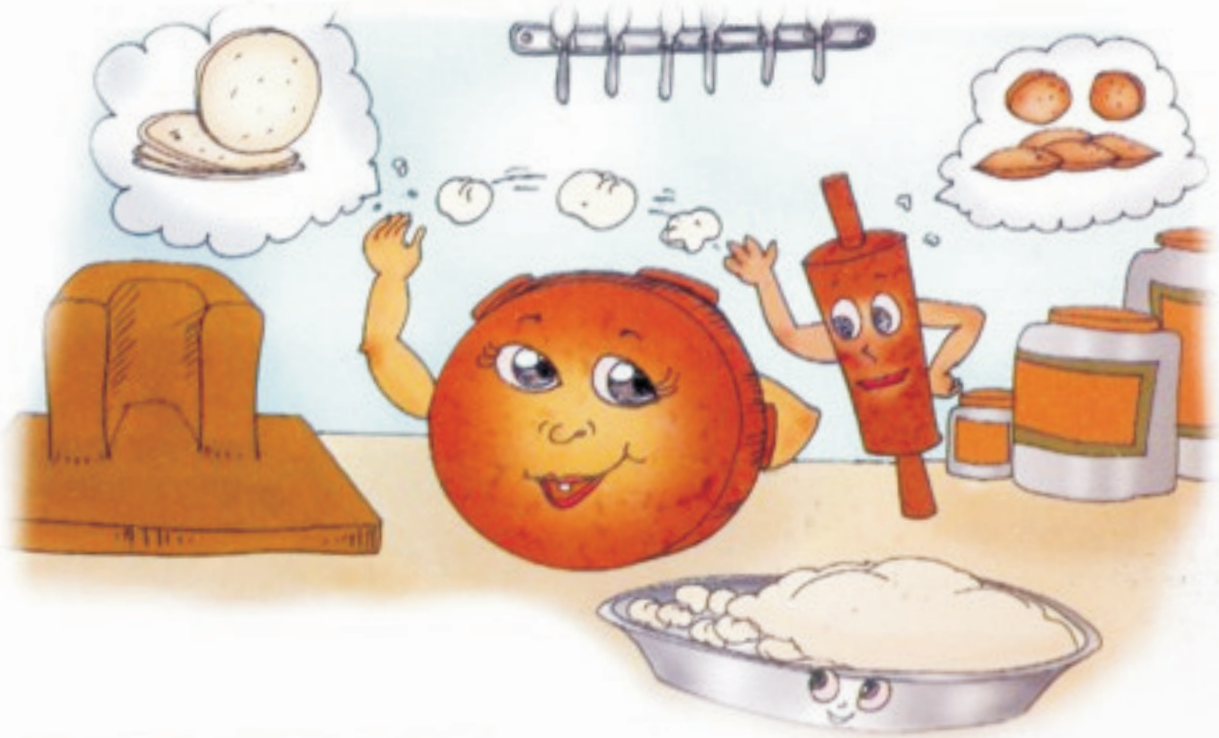

तवा कहाऊँ, दिखता काला,
चूल्हे से पड़ता है पाला।

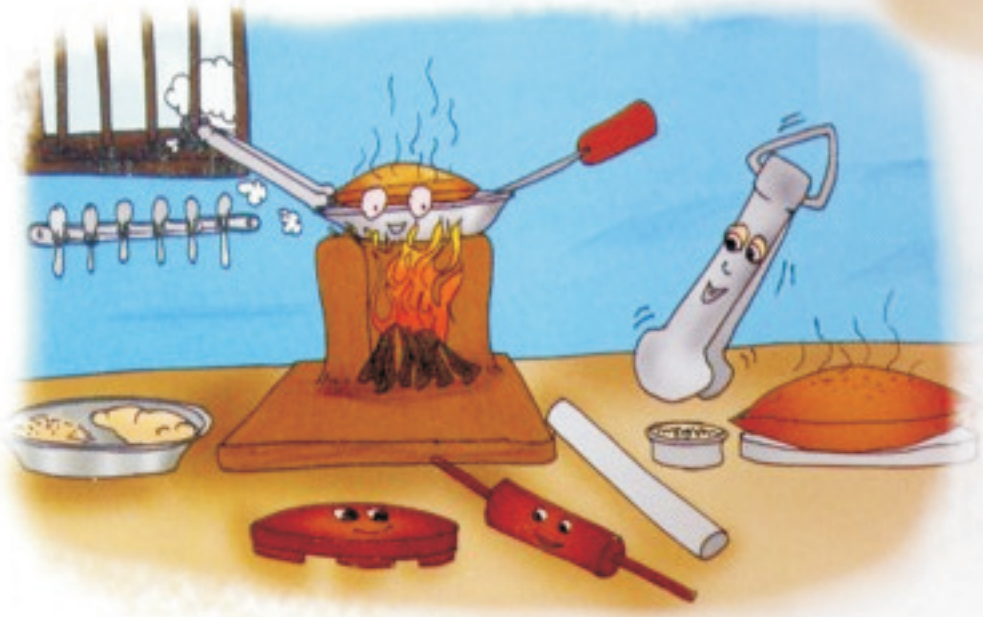

गरम आग में कूद लगाऊँ,
फुला-फुला कर रोटी लाऊँ।

गोल-गोल मैं बनी कढ़ाई,
दोनों कान लिए गोलाई।

कान पकड़ कर मुझे उठाओ,
हलुआ, पूरी सब बनवाओ।

मैं झारा, छलनी का भाई,
नहीं डरूँ, हो गरम कढ़ाई।

फौरन घी में डुबकी खाऊँ।
तलूँ पकौड़ी, पूरी लाऊँ।

मुझे कहें सब लोग भगोना,
गरम आँच से कभी डरूँ ना।

सब्जी, चावल, दाल पकाऊँ,
खिचड़ी गरमा-गरम खिलाऊँ,

मैं करछुल, चम्मच का चाचा,
चम्मच जैसा ही है ढाँचा।

मुझसे चाहे दाल निकालो,
जले न सब्जी, उसे हिला लो।

मैं चाकू सब्जी, फल काटूँ,
टुकड़ा-टुकड़ा सबमें बाटूँ।

गाजर, मूली, प्याज,टमाटर,
छीलो-काटो, रखो सजा कर।

मुझको कहते सभी मथानी,
दही बिलोती मुझसे नानी।

कभी बनाऊँ लस्सी, मट्ठा,
मथ कर मक्खन करूँ इकट्ठा।

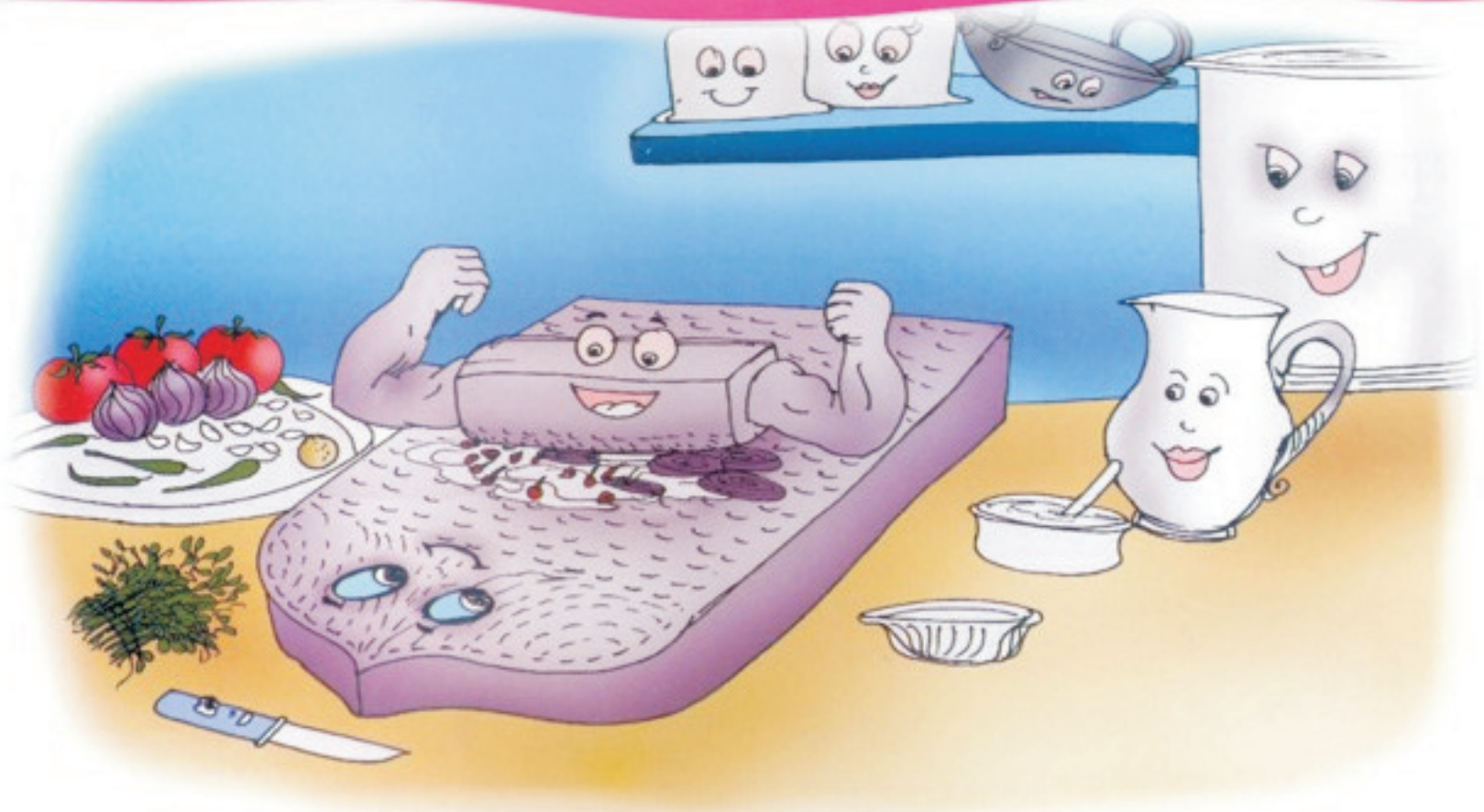

मैं पत्थर का हूँ सिलबट्टा,
देखो कितना हट्टा-कट्टा।

प्याज, मसाला पीसूँ झटपट,
और खिलाऊँ चटनी चटपट।

थाली की गोदी में बैठी,
सुनो! कटोरी हूँ मैं ऐंठी।

चाहे मुझमें सब्जी रख लो,
चाहे हलुआ लेकर चख लो।

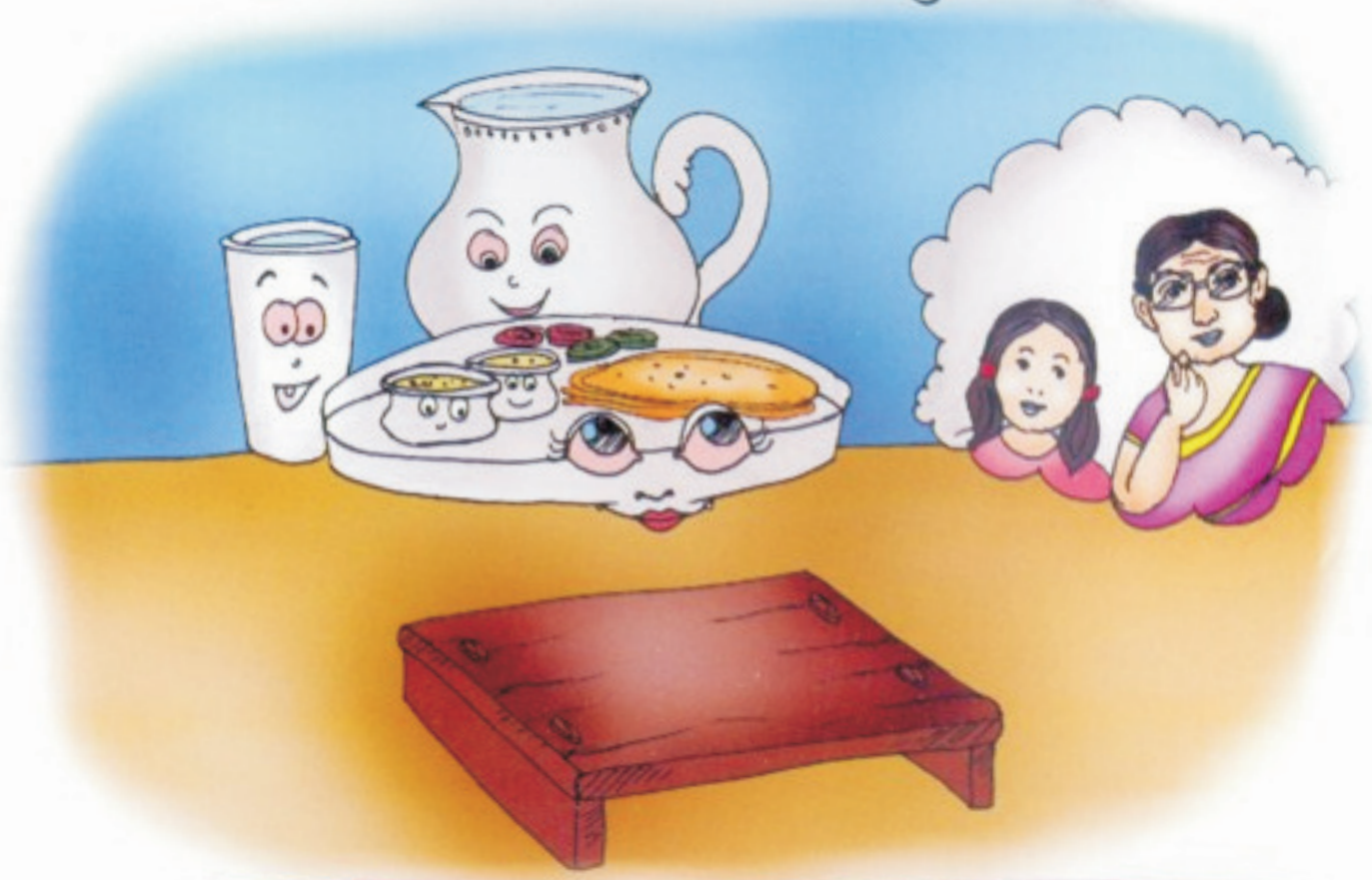

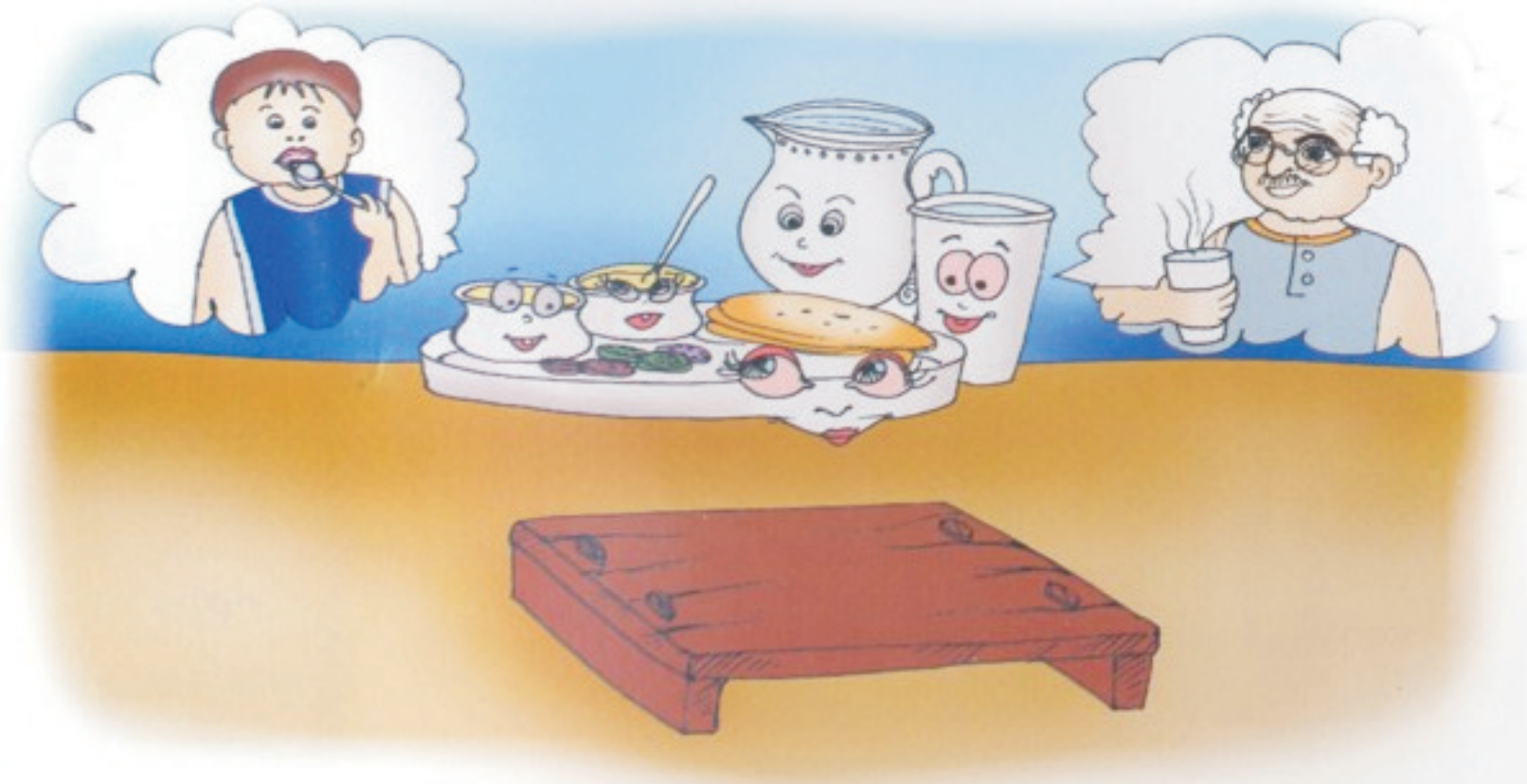

मुझको कहते सभी गिलास,
खड़ा रहूँ थाली के पास।

पानी, शरबत, दूध पिलाऊँ,
गरम चाय नाना की लाऊँ।

गरम चाय मैं सदा बनाती,
नाम केतली सुन, मुसकाती।

उबला पानी मुझमें डालो,
पत्ती, चीनी, दूध मिला लो।

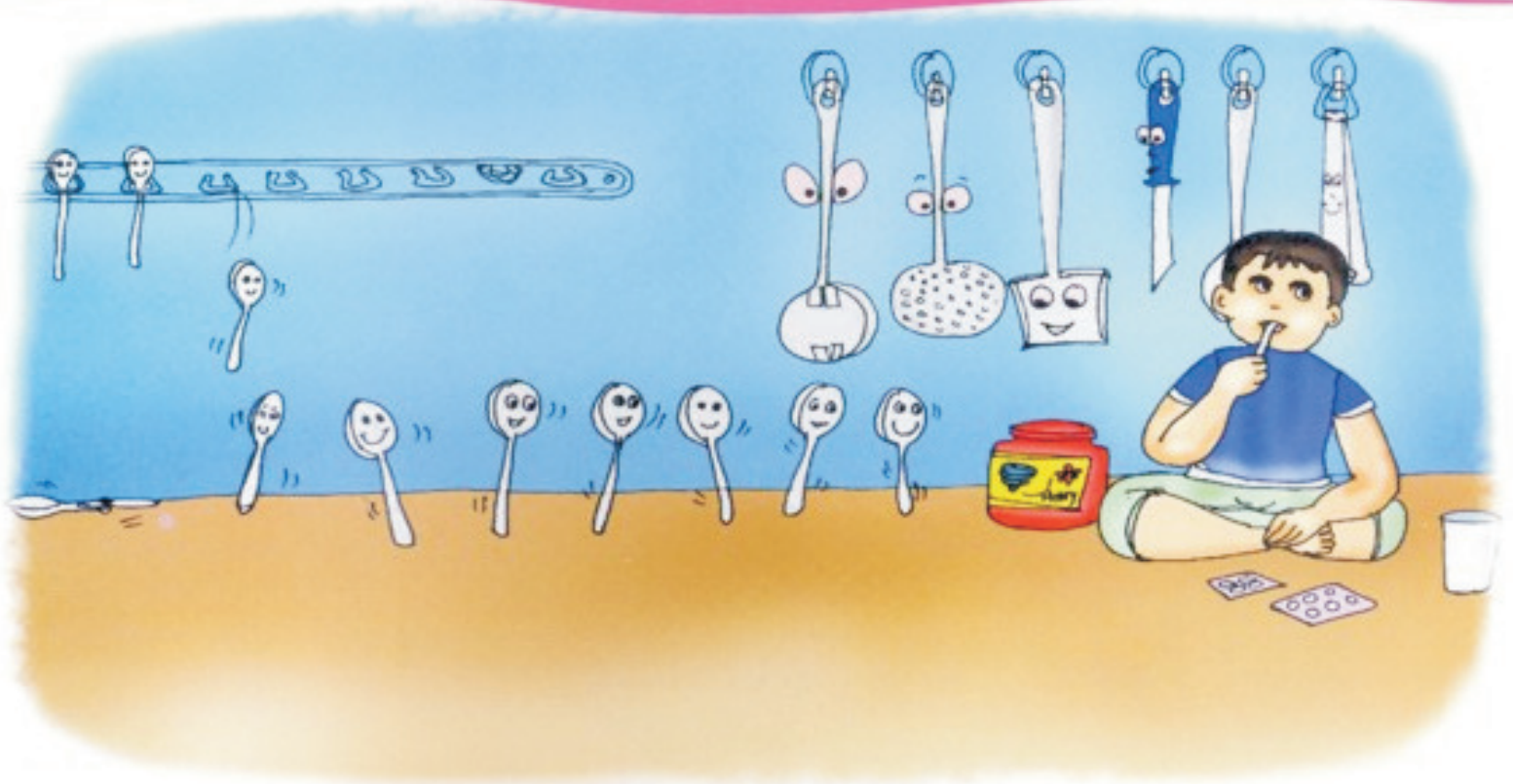

हम चम्मच हैं नन्ही-मुन्नी,
हम रूपये की लगें चवन्नी।

मुँह तक ला खाना पहुँचातीं,
दवा खिला कर, शहद चटातीं।

प्रेशर कुकर हूँ, मुझे न भूलो,
खुद अपने पर यूँ मत फूलो।

भाप बना झट दाल गलाता,
सीटी बजा-बजा इतराता।

सुनी बरतनों की जब बानी,
खुश हो कर मुसकाई रानी।

झटपट अपने बरतन लाई,
झूठ-मूठ की खीर पकाई।

ISBN : 978-81-922136-0-6
मूल्य : ₹95/–

स्पर्शमणि
104 पॉकेट–ए, माउन्ट कैलाश,
ईस्ट ऑफ कैलाश,
नई दिल्ली – 110065
मो. नं. 9958077550